04 जब कला कलाकार बन जाती है....

श्रीवि कल्याण

आकाशीय स्व पर टिप्पणी

अगर हम मूल्यांकन, रोजगार और सफलता के सीमित संसारों से भी आगे तक निकल जाएँ तो ऐसे कला–कार्यक्रम रचने के लिए तैयार होंगे जो प्रत्येक बच्चे की पहचान में क्रान्तिकारी बदलाव ला पाएँगे।

स्कूलों को कला की आवश्यकता क्यों है? एक और, अधिक गम्भीर मगर विचित्र सवाल भी है, जिसकी विचित्रता मुझे पसन्द है–"कला असल में है क्या?" मैंने अपने दोस्तों और विद्यार्थियों से यही पूछा–उनके विचार में कला क्या है? हमारे बीच कुछ बातचीत हुई जो सच में अद्‌भुत थी। हम स्पष्ट नहीं थे, सन्देह में थे और कला के फैलते संसार को समझ पाने की कोशिश करते हुए उत्तेजित भी महसूस कर रहे थे।

मीर मुख़्तियार अली के मुताबिक, "मेरी कला मेरा जीवन है।" मैंने कहा, "भौतिक विज्ञानी, गणितज्ञ, समाजशास्त्री, इतिहासकार, शिल्पकार–मुझे तो हर कोई कलाकार लगता है; और जाहिर है, परम्परागत अर्थ में कलाकार तो निश्चित ही।" नैन्सी राज ने पूछा, "एक नेत्रहीन बच्चा कला को किस नजरिए से देखता–सोचता है?" फिर, जब एक और मित्र, जिगीशा ने कहा, "रंग कागज में जज्ब हो जाते हैं।", तो उसके शब्दों ने मेरे मन में उत्पाद के तौर पर कला और प्रक्रिया के तौर पर कला के बीच के स्वाभाविक, महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध के विचार को छेड़ दिया, और मैंने खुद से कई प्रश्न किए :

1. कला उत्पाद है या प्रक्रिया?
2. प्रक्रिया कब उत्पाद बन जाती है?
3. और कला का उत्पाद असल में क्या है–कलाकृति या स्वयं कलाकार?

कला की हमारी परिभाषाओं का फैलाव

"मैं चित्र बनाना शुरू करता हूँ, तुम हाथों में आसमान को थामो; क्योंकि मुझे नहीं मालूम कि मेरे कैनवस का विस्तार कितना है।"–एम.एफ़.हुसैन

हम शिक्षक, अभिभावक, कलाकार या दर्शक के तौर पर कलाओं को किस प्रकार परिभाषित करते हैं, इससे तय होता है कि हम उन्हें किस प्रकार अनुभव करते हैं, उनका शिक्षण करते हैं या किस प्रकार अपने दिन–प्रतिदिन के जीवन में उनकी आवश्यकता को वैध ठहराते हैं। बहुत बार हमारे मन में 'उपयुक्त कला', 'अच्छी कला' और 'बुरी कला' के बारे में पहले से बनी–बनाई धारणाएँ होती हैं। इसके अलावा इस बारे में भी हमारी समझ सीमित ही होती है कि कला क्या है। मेहन्दी के डिजाइन बनाना कला है या फिर हमें यथार्थवादी चित्र बनाना चाहिए? क्या फल बेचने वाले द्वारा गाया गया लोक–संगीत कला है या जिसे स्टेज पर प्रदर्शित किया जाता है, बस उसी को कला मानें? क्या शब्द 'कला' में इसके सभी रूप शामिल हैं या इसमें केवल चित्रकला, मूर्तिकला, नृत्य और थियेटर जैसी शास्त्रीय कलाएँ हैं? क्या शिल्प भी कला ही है? इस प्रकार के सामान्य–साधारण लेकिन गहरे–गम्भीर सवाल कलाओं की हमारी समझ का पीछा करते रहते हैं।

अपनी पूर्व धारणाओं को आधार बनाकर हम ऐसा वातावरण निर्मित कर लेते हैं जिसमें कलाएँ फल–फूल नहीं सकतीं क्योंकि इससे पहले कि वे जन्म लें, उन्हें तिरस्कृत कर

दिया जाता है। हमने स्वयं को "कलाकार", "वैज्ञानिक", "भौतिक विज्ञानी", "शिक्षक", "अभिभावक" जैसे खानों में डाल लिया है। जैसे ही हम देखते हैं कि कोई चीज इनमें से किसी खाने में फिट नहीं बैठती, हम उसे किसी न किसी साँचे के अनुकूल बाँधने की पूरी–पूरी कोशिश करते हैं। पिंजरे में फँसे एक हाथी से लेकर कक्षा में चुपचाप बैठे बच्चे तक जो कुछ भी किसी डिब्बे में फिट नहीं आता, वह हमें एक चूक की तरह लगता है। लेकिन क्या यह डिब्बा, यह खाना ही एक चूक नहीं है?

वह सन्तुष्टि न दे या बस सन्तुष्टि ही उसका उद्देश्य बन जाए, तो न कला और न ही विज्ञान फल–फूल सकते हैं। कॉन्स्टेबल का आग्रह था कि चित्रकला एक विज्ञान है और मैं सुझाता हूँ कि विज्ञान एक मानवीयता है। इन्हें विरोध में रखना दोनों को ही गलत समझना और दोनों के लिए हानिकारक है।–नेल्सन गुडमन

सोचो और प्रयोग करो

अलग–अलग किस्म के कागज लें (समाचार–पत्र, इस्तेमाल हो चुका कागज, अलग–अलग दाने और बुनावट का कागज) और उस पर स्याही डाल दें। अगर आपके पास जलरंग या रंगीन स्याही और ब्रश हो तो अलग–अलग मात्रा में पानी मिलाकर देखें और कागज पर पेन्ट करें। यह अभ्यास बच्चों के साथ भी करें।

कुछ प्रश्न जिन पर आप मिलकर विचार कर सकते हैं :

जब कागज रंग सोखता है तो क्या होता है? आप वास्तव में क्या होने की अपेक्षा रखते हैं?

कागज में रंग का सोखा जाना सच में कब बन्द हो जाता है? जब स्याही सूख जाती है या जब कागज पुराना हो जाता है? जब लिखने वाला उस पर लिखता है या जब सिल्वरफिश उसे अपना बना लेती है? जब वह कला की कृति बन जाता है या जब कागज लाखों टुकड़ों में टूटना शुरू हो जाता है? जब उसे फ्रेम किया जाता है या जब उसे देखा जाता है?

हम बच्चों से एक यथार्थवादी चित्र बनाने की, या संगीत के सुरों के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध बनाए बिना उसे दोहराने की आशा रखते हैं तो हम उनसे कलाओं में जज्ब होने की काबिलियत को या कलात्मक विकास से होकर गुजरने की प्रक्रिया को छीन रहे होते हैं। प्रयोग और खोज करने की इजाजत न देकर हम समझ की अन्तर्विषयक प्रकृति से भी बच्चों को दूर रखते हैं। क्योंकि उनसे आशा की जाती है कि एक विषय को समझने के दौरान वे एक ही साँचे में बँधकर रहें। हो सकता है कि कुछ गणितज्ञ बहुत ही कमाल के कलाकार भी हों, लेकिन उन्हें दोनों में से किसी भी विषय की अन्तर्बोध पर आधारित अपनी समझ को जाँचने–खोजने का कोई तरीका नहीं मिल पाता। शिक्षण की प्रक्रिया में हम शायद उनके विकास को रोक रहे होते हैं क्योंकि हम नहीं समझ पाते कि इनमें से किसी भी विषय का उनका बोध किस प्रकार कार्य कर रहा होता है।

अपने स्वत्व की परिभाषाओं को विस्तार देना

अभ्यास, अनुभूति या बोध, और कई कलाएँ–ये सब अन्तर्दृष्टि और समझ हासिल करने के तरीके हैं। यह भोला विचार कि विज्ञान सत्य खोजता है जबकि कला सुन्दरता को खोजती है, कई कारणों से गलत है। विज्ञान तो प्रासंगिक, महत्त्वपूर्ण, आलोकित करने वाले सिद्धान्तों की खोज करता है, वह अकसर मामूली या जरूरत से अधिक जटिल सत्यों की बजाए सशक्त, एकताकारक अनुमानों को महत्त्व देता है। और विज्ञान की ही तरह कला नई संगतियों और परस्परता तथा असंगति और विपरीतता की बातों की एक समझ प्रदान करती है। कला घिसी–पिटी श्रेणियों के पार जाकर जिस संसार में हम जी रहे हैं, उसे नई तरतीब देती है, उसे देखने की नई दृष्टि देती है। – नेल्सन गुडमन

वह चाहे मंच–कला हो या दृश्य–कला, कला उससे पैदा होने वाले उत्पाद से कहीं अधिक कुछ है। कला और कलाकार कलात्मक प्रक्रियाओं से होकर गुजरते हुए बहुत ही सहजता से निरन्तरता के साथ विकसित होते हैं। उनकी इस यात्रा में सूक्ष्म आत्मिक 'स्वत्व' के कई आयामों तथा

संसार के सम्बन्ध में सामाजिक और राजनैतिक 'स्वत्व' की समृद्धि होती है। वाणी और भाषा के तौर पर कलाएँ मानव समाज में व्याप्त होती हैं, और स्वयं के बारे में निर्मित हमारे बोध और अनुभूति के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। आइए, इस निबन्ध में 'स्वत्व' के चार रूपों का चश्मा इस्तेमाल करते हुए देखते हैं कि स्कूल में कलाओं को स्थान मिले, इसके लिए नया तर्क कैसे तैयार किया जा सकता है।

सूक्ष्म स्वत्व

"जीवन के अर्थ की खोज और जीवन में स्वत्व की खोज, बच्चे के जन्म के साथ ही पैदा हो जाती है और बच्चा इसकी इच्छा भी रखता है।"– कार्ला रिनाल्डी

कलाएँ हमारे सूक्ष्म स्वत्व यानी मैं तक पहुँचने का नक्शा प्रदान करती हैं। जब हम कला का अनुभव करते हैं या उसकी रचना करते हैं तो हम कई आन्तरिक यात्राओं की शुरुआत भी करते हैं। कभी–कभी बल खाते, बहते रंग हममें एक विचारशील चुप्पी के तार छेड़ देते हैं। और कभी एक राग, एक स्वर, एक कलाकार की आवाज, नर्तक द्वारा जगह का इस्तेमाल और कला के कई अन्य रूप हमें उन पथों पर ले जाते हैं जहाँ हमें सम्पूर्ण जीवन को अपने घेरे में लेने वाली एक बड़ी आत्मा की अनुगूँज सुनाई देती है। कभी यह भी होता है कि हम माइक्रोस्कोप में से या कैमरे के बड़े लेन्स में से देखते हैं तो यह पूरा संसार हमारे सामने खुल जाता है। हम अचानक 'यथार्थ' से हटा लिए जाते हैं और हमारी चेतना से भी परे मौजूद सूक्ष्म, अबोध्य वास्तविकताएँ और सच्चाइयाँ हमारे सामने होती हैं।

"मैं समुद्र तट पर अकेला था, तस्वीरों की खोज में, कि अचानक वह हुआ। समय और स्थान के आयाम गायब हो गए और मैं धीरे–धीरे अन्तहीन नीले में घुलता चला गया। वह जो मेरे मन और शरीर के तंग खोल में कैद था, हर्षोल्लास के भँवर में, आनन्द के उत्कर्ष के भँवर में, फैंक दिया गया।" – अश्विन मेहता

चुनौती

सूक्ष्म स्वत्व को समझने के लिए अवलोकन, व्याख्या और समानुभूति का प्रयोग।

एक पत्ते को देखना और उसका चित्र बनाना जैसी साधारण गतिविधियाँ एक सूक्ष्म संसार हमारे सामने खोल सकती हैं। यह अभ्यास बच्चे को देते समय उसमें मौजूद स्वाभाविक जिज्ञासा को पोषित करें।

- *कितने नजदीक से पत्ते को देख सकते हैं?*
- *तुम्हारी नंगी आँख कितनी चीजें देख सकती है?*
- *माइक्रोस्कोप के नीचे तुम्हें और क्या दिखाई दे रहा है?*
- *क्या हम एक चींटी की आँख से एक पत्ते को देख सकते हैं?*
- *दोनों के चित्र बनाकर देखते हैं।*
- *जब तुमने पत्ते को देखा तो तुम्हें क्या महसूस हुआ? तुम्हारे विचार से जब तुमने उसे देखा तो पत्ते को कैसा लगा होगा?*

बच्चों की भावनात्मक और बोधात्मक समझ को चुनौती देने वाले खुले प्रश्न उनके दृष्टिकोणों के लिए एक चुनौती होंगे और संसार को समझने और अनुभव करने के नए रास्ते मुहैया करवाएँगे।

इन्सानों के तौर पर हमारे विकास के लिए और खुद में करुणा की खोज कर पाने के लिए यह सूक्ष्म स्वत्व महत्त्वपूर्ण है। यह हमारे लिए मन–मस्तिष्क में जगह बनाने में भी मददगार होता है ताकि हम नए सिरे से कुछ रच पाएँ। तो हम इस सूक्ष्म स्वत्व को कैसे शिक्षित कर सकते हैं? क्या हम सौन्दर्यशास्त्र तथा बोध, दोनों के माध्यम से अपनी कक्षा में ऐसी जगह निकाल सकते हैं जिसके चलते स्वत्व की इस खोज के लिए गुंजाइश बने।

सामाजिक स्वत्व

घास इस धरती में अपनी भीड़ तलाशती है। पेड़ आकाश का एकान्त तलाशता है। – रबीन्द्रनाथ टैगोर

हममें से प्रत्येक, एक साथ, रिश्तों के एक ताने–बाने में हैं। जीवन के दौरान हमारे द्वारा बनाए गए सब रिश्ते जटिल भी हैं और सरल–साधारण भी, फिर वह चाहे अन्य इन्सानों के साथ हों या प्रकृति के साथ, वस्तुओं के साथ हों या फिर अमूर्त विचारों के साथ। हमारे सम्बन्ध एक ही समय पर अनुभूतियों, तर्क, गहरी भावनाओं, खोजों, अभ्यास, सीखने, टकराहटों और फैसलों, सबको अपने घेरे में लेते हैं।

इस सामाजिक स्वत्व के जटिल चित्रपट की लगातार फैलती जागरूकता बच्चों को जीवन के हर मोड़ पर स्वयं को पुन: पाने में मदद कर सकती है।

मिलकर खोजें

सामाजिक स्वत्व को समझने के लिए अमूर्तता, तुलना और अन्तःक्रिया का प्रयोग।

बच्चों से कहें कि अपने आसपास की साधारण वस्तुओं से संगीत रचें। उन्हें बहुत ध्यान से सुनने को कहें। इस ओर ध्यान देने को भी, कि किस प्रकार प्रत्येक स्वर उनके आसपास की चीजों के साथ अन्तःक्रिया में आ रहा है।

उन्हें और ध्वनियाँ रचने के लिए अपने शरीर का प्रयोग करने को कहें। उन्हें इस बात पर विचार करने को प्रोत्साहित करें कि ध्वनियाँ किस प्रकार उनके मन और दिल के साथ अन्तःक्रिया में आती हैं।

जिन पथों से होकर ध्वनियाँ गुजरीं, बोर्ड पर उनका नक्शा खींचें। आयामों, अणुओं और उपमा–अलंकारों की बात करें।

प्रत्येक बच्चे से इस अनुभव को चित्रित करने को या फिर उसके बारे में लिखने को कहें। और फिर हल्के से सुझाया जा सकता है कि वे एक और चित्र यह कल्पना करते हुए बनाएँ कि जितने भी लोगों या जीवों को वे जानते हैं, वे सब ध्वनियाँ हैं। देखें कि किस प्रकार वे रिश्तों के बारे में दिलचस्प सम्बन्ध बनाना शुरू करते हैं, और जीने की खूबसूरत कला के बारे में भी।

राजनीतिक स्वत्व

"नन्हे, इस अन्धेरी रात से न डरो। सत्य और प्रकाश को देखते हुए निडरता से चलो। प्रेम करो, मेरे बच्चे, पूरा दिन हँसो, मगर किसी से उसका गीत न छीनो।" – रस्किन बॉण्ड, रेन इन द माउण्टेनस।

मिलकर रचो

राजनीतिक स्वत्व को समझने के लिए सोच–विचार, करुणा और शोध का प्रयोग।

बच्चों से कहें कि वे मिल–जुलकर एक नाटक लिखें जिसमें उनकी आपस की कुछ भिन्नताओं और कुछ समानताओं को भी ध्यान में रखा गया हो। कल्पना करने को कहें कि वे सब भिन्न–भिन्न जीव हैं और वे एक स्कूल की स्थापना करने के लिए इकट्ठा हुए हैं। वे सब मिलकर कैसा स्कूल बनाएँगे? प्रत्येक टीम को अलग–अलग समस्या पर सोच–विचार करने को कहें। एक टीम वास्तुकला पर काम कर सकती है; दूसरी, शिक्षण विधियों पर; और एक अन्य टीम नीतियों और शासन पर।

बहुत छोटी उम्र के, पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों के पास भी, इस प्रकार के विषय पर सादा लेकिन गहरे विचार हो सकते हैं।

प्रत्येक बच्चा अपने लिए निरन्तर एक राजनीतिक पहचान भी बना रहा होता है। लिंग, समुदाय, संस्कृति, धर्म, राष्ट्रीयता, वैश्वीकरण, मीडिया – इन सबके द्वारा बच्चे पर एक राजनीतिक पहचान थोपी जाती है। राजनीतिक पहचान का निर्माण एक कठिन चुनौती है क्योंकि यह इतिहास को तथा भूत, वर्तमान और भविष्य की व्याख्या को भी ध्यान में रखती है। एक पेड़ का चित्र बनाने के सरल–सादा काम पर भी हमारी अचेतन राजनीतिक पहचान के कई तरह के प्रभाव हो सकते हैं। जिन तत्वों से मिलकर उसकी सोच बनी है, उनको ध्यान में रखते हुए बच्चे को कला की विचारशील रचना करने, लिखने या चिन्तन में शामिल करना एक करुणामयी और अर्थपूर्ण राजनीतिक पहचान बनाने के लिए महत्त्वपूर्ण है।

आकाशीय स्वत्व

तेज चलती, नमी भरी हवा में चमेली के फूल अपनी ही गंध में आनन्दित हुए झूल रहे हैं। बादलों में छिपे सितारे गुप्त रूप से रोमांचित हो रहे हैं। मैं भी अपने हृदय को पूरी तरह लबालब अपने ही गहरे आनन्द से भर लूँ।
– रबीन्द्रनाथ टैगोर

क्या हो अगर हमारा स्वत्व हमारे स्वीकार्य विचारों और धारणाओं तक सीमित न हो! क्या हो अगर यह आकाशीय स्वत्व हो? तब इसकी आवाज और ध्वनि कैसी होगी? किन रंगों से यह बना होगा? आकाशीय स्वत्व में आकाश तो बस एक अन्जाने खुले स्थान का रूपक मात्र है। ऐसा आकाशीय स्वत्व एक साहसिक, जोखिम उठाने को तैयार बच्चे को अपनी सम्भावनाएँ खोजने और विकसित होने की छूट देने वाला ताकतवर साथी हो सकता है।

हमारी परिभाषाएँ स्वयं के बारे में हमारे विचारों को सीमित कर देती हैं। 8, 9 और 10 साल के बच्चों के एक समूह ने इस विषय पर लिखने का अभ्यास किया – "अगर मैं मैं हूँ, तो मैं कौन हूँ?" दो हाथ, एक चेहरे, नाक, कानों वाले लड़के या लड़की के रूप में मानव होने तक सीमित न रहकर वे अचानक खुल गए और इस ब्रह्माण्ड जितने ही विस्तृत और चींटी जितने छोटे हो गए–जानवरों की आवाजें निकालने लगे और इस बात से खूब आनन्दित हुए कि वे कितनी अलग–अलग तरह की चीजें हो सकते हैं। सबने पाया कि अगर वे अलग–अलग तरह से महसूस करते हैं तो इसका अर्थ है कि सबके मस्तिष्क भी अलग–अलग ही हैं–इसीलिए अलग–अलग तरह से सोचना भी होगा। अचानक महसूस होने लगा कि हमारे शरीर और हमारे मन कितने लचीले, कितने परिवर्तनीय हैं। यह सब स्वयं के साथ समानुभूति के अभ्यास की तरह था। बच्चे अपने माता–पिता या शिक्षकों को प्रसन्न रखने के, इम्तिहान में अच्छे अंक प्राप्त करने के, एक छोटे से दायरे के भीतर रहते हुए कल्पनाशील और रचनाशील होने के इतने आदी हो जाते हैं कि उनके लिए स्वयं अपने अन्दर तक, अपने स्वत्व तक पहुँचना असम्भव हो जाता है।

नृत्य निर्देशन

आकाशीय स्वत्व को समझने के लिए कल्पना, खाली जगह और खोज का प्रयोग।

बच्चों को सुझाएँ कि वे एक दिन के लिए आकाशीय लोग हो सकते हैं। उन्हें उसी तरह स्कूल में घूमने–फिरने, इकट्ठे मिलकर नाचने, कानाफूसी करने या चिल्लाने को कहें जैसे खुले आकाश के लोग करेंगे।

समूहों में काम किया जाए; प्रत्येक टीम अद्भुत चीजों और ग्रहों की पड़ताल करे, और उन चुनौतियों की भी, जिनके अन्तरिक्ष में सामने आने की सम्भावना हो सकती है – उनके इर्द–गिर्द नाचते हुए, उनके आर–पार, उनके ऊपर या नीचे।

विद्यार्थियों के साथ मिलकर 'आकाशीय स्वत्व' शीर्षक से नृत्य तैयार करें। पूछें कि यह कितना बड़ा है, उसमें कितना कुछ आ सकता है, उसके साथ वे किस प्रकार के संगीत को सम्बद्ध करते हैं और क्यों। इनमें से प्रत्येक खोज उनके मन और शरीर को जीने के एक नए तरीके की ओर ले जाएगी।

"प्रकृति अपने पैटर्न बुनने के लिए लम्बे से लम्बे धागे ही प्रयोग में लाती है और उसकी बनावट का प्रत्येक छोटा टुकड़ा पूरे चित्रपट के गठन को हमारे सामने लाता है।"
– रिचर्ड पी.फाइनमैन

प्रत्येक बच्चा मानवता के एक रहस्य को उद्घाटित करता है। प्रत्येक बच्चे को यूँ पोषित–शिक्षित कर पाना (जिससे यह देखा जा सके कि वह किस प्रकार जीवन के इस शानदार चित्रपट को उद्घाटित करता या करती है) शिक्षकों, अभिभावकों और स्कूलों के सामने यही चुनौती है। कलाओं में कई रणनीतियाँ, नजरिए, विचार और पथ बच्चे को इस बात तक स्वयं पहुँच पाने में मददगार हो सकते हैं। लेकिन ये खोज हो पाए, इसके लिए कलाओं के प्रति हमारा दृष्टिकोण एक स्तर पर अन्तर्विषयक प्रकृति का होना

होगा। दूसरी ओर हमें यह भी देखना–समझना होगा कि कलात्मक प्रक्रियाओं की प्रकृति भी बोधात्मक होती है। वे हमारी सोच को चुनौती देती हैं, उसे पोषित करती हैं और हमें कई आयामों में विकसित होने में मददगार होती हैं। अगर हम आकलन, रोजगार और सफलता के सीमित संसारों से आगे निकल जाएँ तो ऐसे कला–कार्यक्रम रचने के लिए तैयार होंगे जो प्रत्येक बच्चे की पहचान में क्रान्तिकारी बदलाव ला पाएँगे।

मैं आपके लिए सोचने को कुछ सवाल छोड़ रही हूँ:

1. कला क्या है?
2. कला उत्पाद है या प्रक्रिया?
3. प्रक्रिया कब उत्पाद बनती है?
4. और कला का उत्पाद सच में क्या है – कलाकृति या स्वयं कलाकार?

श्रीवि *शिक्षक, लेखक, डिजाइनर, इलस्ट्रेटर हैं। वे बच्चों और वयस्कों की पुस्तकों और कहानियों की लेखक, सह–लेखक और इलस्ट्रेटर रही हैं। श्रीवि सीखने के अर्थपूर्ण अनुभवों के निर्माण के लिए शिक्षा में कला का प्रयोग करती हैं। वे Foon-iferse Arts Pvt. Ltd. (www.fooniferse.com) की संस्थापक निदेशक हैं। उनके कार्य को www.sriviliveshere.com पर देखा जा सकता है। उनसे srivikalyan@fooniferse.com पर सम्पर्क कर सकते हैं।* ***अनुवाद*** *: रमणीक मोहन*